THE INSTITUTE FOR ADVANCED STUDIES OF WORLD RELIGIONS

FILM—STRIP NO.
MBB—1971— 213-113

BUDDHIST SANSKRIT MANUSCRIPTS

MICROFILM PROJECT MBB — 11

MBB-1973-213
1. Film strip number

71
2. Source

JALAHOMAVIDHI
3. Title

4. Additional titles, shortened forms of title, etc.

N.S. + 880 = A.D.
5. Year in which MS was copied (Nepali Samvat and Christian Era)

×
6. Name of Scribe

NEPĀLĪ PAPER
7. Material (Palm leaf, etc.)

NEWĀRĪ
8. Script

10 cm. x 18 cm.
9. Size

8
10. Lines to a page

13
11. Number of leaves in complete work

×
12. Missing leaves

×
13. Author and Date of composition (if given)

×
14. Number of Chapters

15. Remarks
Ritual practise to create water source. It is very effective practise.

May 8, 1973.
Date photographed

ॐ नमो श्रीवज्रसत्वाय॥ ॥पनाति क्रूपथानाय॥नागिसं: आदी: त
नि चाग्व ६ म ध्यस: विही: गका: किज हवे: धाउ: या धाल॥ पूर्वस: वि
हि स्वानवा: वीज: मिल। धाउ: लू:॥ दक्षिनस॥ विहि मासे: वीज
पुष्प नाग: धाउ सिजल॥ पश्चिमस: विही: कविज: मेदि का: धाउ
कयर्ण॥ उत्तरस॥ विही: पुष्पा। वीज। मल। धाउ ठाह:॥ ॥ आग्न
विहि॥ नाम्ह। वीज: कर्कीय॥ धाउ मल भर्मा लिथिनि। विहीनुका
वीज: विशवा। धाह। लिटि॥ वायुव्य॥ विहि। खयेहा। विज। जाडोगा। धाउ न॥ अ
पू नाग धाउ सुणि पंचामृत॥ ॥हिरि: तुथि तजल सा॥ निनि चाग्व ८ का का सं: नयके

गुनूम छुलयाय ॥ ॥सिंधुरगय॥ नागस्नाथियाय ॥दनसा॥श्रीलक्ष्मी
जक्रजेऊमी ॥ अर्घ्यम्: ॐनायः कलसः सर्वः मदः पूजायाय. विधिथं
पूजायायधुनकाउं॥ जेलकंछुलसअर्घ्यविसर्जनयाय॥ वाकी॥ ॐसं
खेंहूं लेंह्रूं ॥थनसंखलखनेहायो॥ पंचगव्यनेहाय॥ ॐमट नीकजी
ह्रीफवेवजवंश्वर्ह ॥वजनेअर्घ्यविसर्जनयाय॥ ॐवजसलखो ३॥थ
नकूशथापनायाये॥ नणा ॐमहा क्रम्ष्मयादि ४ ॥थनलोकपालव
लिविय॥ ज्वः याः पूः पं: लों: पं: मु॥ गि: ॐ दुसवपाणि वेवं: ॐवजच्य
यथाउहसावलं: सर्वयज्ञाथियाणि द व ॐन्दीयनमास्यहं॥ १ ॥

ग्लखं

१

थनालिवलिविषाः क्रिया. यायः धूनकाउ॥ क्रसियास्फ हस्फ पूजायाय॥ दक्ष
खांदं २ अरुगयाल उ॥ ज्ञाय॥ खसिकुवांक पद पं अं ज्वपदनकां॥ ध्वगे धू
नकाउ॥ ॥ प्रतिस्थेयाणसाः खुसियालं खकायाउ॥ ह्वीलाय॥ हावा न्कं
६ नागयावक्षेवास्यं॥ स्थापनायाय॥ चन्द्रविम्बउ हणाला १ सूर्य्यविम्ब
लुस्यं ८ कोयलासः णयाउः अष्टदलपम्नवीयाउ॥ मध्यसं॥ स्थापना
याय॥ दिगसः खालः च्यागव उ ८ न उयकं॥ कुम्भ हुका॥ पंचस्तुका
नीहिन॥ ॥ पंचविहिनी॥ पंचकडषाजिदि॥ पंचवलवे॥ पंचामृत नं. विवि
घना॥ क्षैमः सघः मणः पंचगव्यः पाव॥ थूणिस्थापनायास्यं॥ ॥ स्नावास्यं

१

नतंच: श्रुक्रवर्द्धमहाकलं। सदाकल्यानगिर्णवःश्रि पूरा नाक नमाम्यहं
८ ॥ ऊर्ध्वब्रह्मापीगवेर्घी: वेणुवर्द्धयालगर्ककामहलूः अक्रसत्रं हंसा
रूढं नमाम्यहं ॥ ९ ॥ नागराजारूढं वर्लः कृतांजलिकलपं नं। षध
पाविसंस्थितंग्रे: बाघनागं नमाम्यहं ॥ १० ॥ पिंपिक्रं भव्यवैवेवः ज्ञम
नक्रसंज्ञकं। सर्वाद्धिकामकं वर्द्धः पद्मासनं नमाम्यहं ॥ ११ ॥ नगात्र
लस्त्रोपनायगान्यस्तु॥ नयहंसर्वपद्व वसाकिनावयित्वा। मैत्रीकृष्टं
मूर्द्धिणापक्षा। सर्वसत्वसमूसारत्वास्वकांहिस्य नवंकार। वीजपनि
नामेनां४ हालमूनननंद भादगने मूलीक चाउस्फिन। सर्वदेवन

२

नीलकायमहागर्ज्जः माहिषासरिन्दं । जम्भदत्तकारधार्यः श्रीकणकक
न्नमाम्यहं ॥ २ ॥ शुद्धस्फटिकसंकाशं अष्टनागविपयवस्त्र जालस्फटि
कारधार्यः वज्रहाय नमाम्यहं ॥ ३ ॥ सर्वकायमहागर्ज्ज । जाम्बका
लसमप्रगा ॥ अश्वरूपप्रकाशयः क्रोधवाय नमाम्यहं ॥ ४ ॥ वादि
...यगर्ज्जः सूर्योयाकण्ठनवीर्लं वामकेसङ्गरूपधार्यः अकाशनं नमा
म्यहं ॥ ५ ॥ लोकावहोमहाकायं हातालतवहारविर्णं खगेयात्र
नवीरं प्रगाशनं नमाम्यहं ॥ ६ ॥ पतहस्तुकसवार्णं सत्त्वाद्दर्हंस विधि
हावलं । चंचलपनदर्वः प्रगाशनं नमाम्यहं ॥ ७ ॥ सूर्योयाविधि

नक्षागत्यलक्ष्मि॥ आकर्षण॥ ॐ ख जां कू अः॥ ॐ वज्र पाशवं॥ ॐ वज्रां
वेसहा ४॥ ॐ वज्रस्फोट बं॥ ॐ श्रीवज्र वैरूक्ष· प्रवेस कानाम पुस्
पुजाचसमन्त प्रणिद्ध स्वाहा॥ जं हूं वं हों॥ ॥ पुष्पन्यास॥ ॐ अ
४वै आचनीद वः वज्र वरूक्षाय स्वाहा॥ ॐ वज्र वरूणसाक्राय स्वा
हा४॥ दथ भं॥ ॐ वासुकी नागराजाय स्वाहा४॥ मि उ अन्य॥ ॐ त
क्ष क नागराजाय स्वाहा४॥ ख उ अ॥ ॐ कर्कोट क नागराजा
य स्वाहा४॥ प उ अन्य॥ ॐ पद्म नागनाराजाय स्वाहा४॥ ज उ
स॥ ॐ हूहूरू नागराजाय स्वाहा४॥ ख उ को थके॥ ३ ॥

जलहो
२

मस्तामल्यल्लस्मि ॥ आकर्षेत ॥ ॐ वज्रांकुश जः ॥ ॐ वज्रपाशेन वं ॥ ॐ वज्रावेश
हो ॥ ॐ वज्रस्फोट वं ॥ ॐ श्री वज्र वसुधाः पूर्व विसर्जनायुः अर्घं आवम
नैवेद्य फ स्वाहा ॥ जः हूं वं हो ॥ पुष्पन्यास ॥ ॐ आः वै नाचे नीलवेः
वज्रवसुधाय स्वाहा ॥ ॐ आः वज्रवसुधाय स्वाहा ॥ दधुरं ॥ ॐ वासु
किनागराजाय स्वाहा ॥ ह्रीं ॐ न्य ॥ ॐ तक्षकनागराजाय स्वाहा ॥ ॐ श्व
उस ॥ ॐ कर्कोटकनागराजाय स्वाहा ॥ थ ॐ न ॥ ॐ पद्मनागरा
जाय स्वाहा ॥ ज ॐ स ॥ ॐ हूं हूं र नागराजाय स्वाहा ॥ ख ॐ की य कुं विधि
ॐ शंखपालनागराजाय स्वाहा ॥ ख ॐ थ थ ह ॥ ॐ क कुलीकना २

राजाय स्वाहा ॥ ॐ ह्रैं हलीनागराजाय स्वाहा ॥ ॐ पाठिंसदक्षमध्य
ॐ गंगगानागराजायस्वाहा ॥ ॐ सिंद्रसिन्धुनागराजायस्वाहा ॥
ॐ श्रं अश्वसनागराजाय स्वाहा ॥ ॐ ववनक्षेनागराजायस्वाहा ॥
ॐ सिंसिजानागराजाय स्वाहा ॥ ॐ कलश्दलमध्य ॥ ॐ जं जविलनागरा
जायस्वाहा ॥ ॐ अश्वकनागराजायस्वाहा ॥ ॐ भनवजफनागराजाय
स्वाहा ॥ ॐ मणसिर्पनागराजाय स्वाहा ॥ ॐ ससहमणिप्रलनागराज
यस्वाहा ॥ अग्निदल ॥ ॐ अंअवलोनागराजायस्वाहा ॥ ॐ अष्टन ॥
ॐ नंदनागराजायस्वाहा ॥ नैऋत्य ॥ ॐ संसमुद्रनागराजास्वाहा ॥

जलकुं

४ ॐ मं महापद्मनागराजाय स्वाहा ॥ खड्गाथथूकूं ॥ ॐ कूं कुलीकनाग
राजाय स्वाहा ॥ जउाथथूकूं ॥ ॐ शं शंखपालनागराजाय स्वा
हा ॥ जउांकोथूकूं ॥ ॐ ॥ जकवाक्षकपद्मपजिकायोमध्यस ॥
ॐ गगगपराजायस्वाहा ॥ पृथ्वीनिस्पृं ॥ ॐ चं चन्द्रपरःनागराजाय
स्वाहा ॥ ॐ वं ब्रह्मनागराजाय ॥ ॐ सं सर्पर्ययिप्रगनागराजाय स्वा
हा ॥ ॐ भं सकवासुनागराजाय स्वाहा ॥ कणादिक्षिप्रहारापमनमध्य
से ॥ ॐ मं मुचिलिन्दुनागराजाय स्वाहा ॥ ॐ स समघिपुष्पनागराजा किवि
य स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं कुंन्दुपकनागराजाय स्वाहा ॥ ॐ वं वर्षनागनाग ४

मिः जाङ्गु नदश्नवननस्त अर्हां। प्रयामि। उग्र ध्य छ्रुड स्वनिकलंः कानूक्ष्म उचि
र्लिः धर्म्मं चिस्मृधि स्कैपूसानमूर्द्दं समग्र संघजिनासजः गज नेः उहि
नेः महाकं॥ निर्य्याणयामि निरितिजदाहः गणवृद्धाय स्तासंगन्धाय स्कल्य
स्काय॥ सर्व्वास्तना तिस्मणः वस्तु पर्न॥ कपलासंः शंखलुषणया॥ ॐ अनन्त
वासुकिः तक्षक कर्कोटक पद्म महापद्मः शंखपालः कुलिक · वसुकपाल
र्दवनिमहार्दवाणिः श्यामशिरिव र्दहुध्वजः महार्दहुध्वजः अपलालसं
नु २ नन्दोपनन्दः सागरः अनवतप्त· श्रीकार्त्तिकस्वरूपमहास्वरूपः मा
लीर्दिकमाहार्दल· सिंसिमहासिसिः हंसा हनागाधिपतिः पनानीःकु

जखडी

५ वायव्य ॥ ॐ वंवरुणनागराजाय स्वाहा ॥ शांति ॥ यं ॥ ल्लौः पंः क्षुंः

वणिरत्नावरुण नूपं: जलनप्रणालीः पूज्यं जलाश्रयकं: नवरु ज्जागकी

नपूष्पं नहीं ... पृ: रत्नावणिपूर्व कठिन नव नूर्ध्वं: नमामिस्यहं ॥ ॐ नमस्ते

नमामि हं । नमो ह्रीं: सदेवरूप्पपूजायस्थानमानं निर्यात्कयामि । सर्वस्त्र यथि

ता हं: ज्वालानं निर्यात्कयामि । संसालवस्थि माहयष्ठ: यापंडजसर्वे अद

न नूवाषभनादिः गर्द नयामि जितेन्द्र कानूद्ध्यनिंवम नमः पूज्य गाजिना

नां । संपूहवूहर्षः गंवूहकुलयपूर्वकं । सर्व जगच्छिमंगलकालिपू विधि

धी ॥ कलशं गर्व: जमापस्कंदानद श्री वृहगामाहाजजनिष्ठ यात्रिहासया

५

जा: कूंकूमवर्ण्णीसफरूणा ॥ ॐ अनन्तदलं सस्त्रपत्रनागराजा: पीतवर्
ण्णीसफरूना ॥ खस्वमुद्राविकाश्य: स्वालजुसमापन्ना: समयसर्वकल्पसं
पस्कान: ग्रहीहि गोगो वरूदवजम्बकूलं: महानागआविर्याकृ: ॐ हर्ते
स्वाद्रियं: पनागीनाय: आगच्छ हृ वस्त्रा ॥ ॥ आ: या: पू: निलाजन
॥ ॐ गौकिलाजम्ह २ गम्भिराजम्हवेद भीय ॥ ॐ जम्ह वं हाथा ॥ ॐ वसु
कायफूं पं फूं स्वाहा ॥ ॐ अनन्ताय फूं स्वाहा ॥ ॐ वासुकिय फूं वं फूं स्वाहा ॥
ॐ तक्षकाय फूं नं फूं स्वाहा ॥ ॐ पद्माय फूं वं फूं स्वाहा ॥ ॐ महापद्माय फूं नं
फूं स्वाहा ॥ ॐ शंखपालाय फूं नं फूं स्वाहा ॥ ॐ कर्कोटकाय फूं नं फूं स्वाहा:
ॐ कुलिकाय फूं नं फूं स्वाहा ॥ पं: लों: पं: ॐ: ॐ वसुन्धरादया नागराजं

जलेहा

५ पञ्चागङ्क स्त्रीःयनार्थ स्वस्ति स्वाहा॥ ॥गणा आयमध्यत॥ हामनागवना॥ ॐ
गाणा आयमध्ये कुलमध्यवेंकालमा पमम्मालमध्य. नदू पश्चियंकालावर्णः वसू
वसुकानूपंः त्रकमुखं. दिरस्ज. शुक्रवर्णः सफफ्नो लंछनं. वासनागपाम
ध्वजी. पूर्वदलेः अनन्तनागराजा. नीलवर्णत्रिफना॥ दक्षिणदले॥
पद्मनागराजापेंचफना शुक्लवर्ण॥ पश्चिमदले॥ तक्षकनागराजाः रक्त
वर्णः नवफना॥ उत्तरदले॥ वासुकिनागराजा स्यामवर्णः सप्तफ
ना॥ अग्निदले॥ संखपालनागराजीः रक्तवर्ण सप्तफना॥ नैरृत्ये विथि
कर्कोटकनागराजाः धवलवर्णसप्तफना॥ वायव्यः कुलिकनागरा

६

ह्काशायस्वाहा॥ सुखनाम्लि॥ ॐ अप्रतिहतवज्राय स्वाहा॥ कुश ॥ ॐ वज्र
यक्षस्वाहा॥ सकु॥ ॐ सर्व्वपापदहन वज्राय स्वाहा॥ नागुहास्तु॥ ॐ वज्रपु
ष्प स्वाहा॥ जुङु॥ ॐ वज्र गन्धाय स्वाहा॥ पञ्चौ॥ ॐ वज्र विक्षाय स्वाहा॥
स्वानओ॥ ॐ सर्व्वार्थ सिद्धिय स्वाहा॥ ह्रीका॥ ॐ वज्र दर्शन स्थलाय स्वाहा॥
कोल॥ ॐ वज्रनाजाय स्वाहा॥ काय॥ ॐ आः हूँ स्वाहा॥ कुयुसकु॥ थनस्तु
लमक्वनं सपञ्चल चालवानाओ विहिइय॥ ॥थनजलाहुतियाय॥ थ
नुस्वानाहुति। पूनकाओ॥ मक्त्तजाय॥ ॐ वज्रवनू क्षय. ॐ हज स्वाहि यव
सोपयहूं वहूं स्वाहा॥ चाल १०८ ॥ ॐ मिमकुल च्येनं ४॥ ॥थनीलिनाग

स्व स्वद्वभावविस्फिताः सत्त्वार्थाय सद्दामिर्थ्यः वज्रक्षायनमाम्कुण ॥ पार्य्यक्षोविम्
विय ॥ ॐ सर्वतथागताविध्वंसन स्वाहा ॥ अं खलनंहाय ॥ ॐ वजद्ध्यनमै
फ्सकनकन ॥ साइडुनय ॥ ॐ वेधालाहङ्गं ॥ घलम्ह्यः अं खमतया माइडु
ड्डय ॥ गगाजलसिमाविय ॥ ॐ वज्रक्षाध्विपतसर्वविघ्नाहलं ॥ ॥ जलषिमा
विहिसाघनयाय ॥ ॐ खक्लाहङ्गं स्वाहा ॥ ॐ गगावज्रगुक्रनंइँकालमन
वंरलप्रमानं गुक्रवर्जंपिलाग्यु ॥ ॐ वज्रवज्रक्षायस्वाहा ॥ वल्लुसि ॥ ॐ वाघि
वृज्ञायस्वाहा ॥ ठलगणाहि ॥ ॐ वजयक्षायस्वाहा ॥ इवलसि ॥ ॐ वजन विवि
नायस्वाहा ॥ पिलाखेसि ॥ ॐ वजकुण्डलायस्वाहा ॥ इम्वेनासि ॥ ॐ वजस

दय:मछ्क्षह्र णिस्वाहा॥ पँ: लँ: घँ: ॐ:॥ थनहिंहिमहालसा:रि ह्रसा चार्य्यी
व्राक्मन यनिस्फ दानविय माल॥ प्रक्रिस्फा कर्मोझलसा: दानवियमूस्वाल्:
थनगअलसक्काहाउनाउं:धूपथन॥ ॐखलपुनंगप॥ ॐखछ्ला हर्ह्रैं
रुरु स्वाहा॥ थनवेजर्न ज्र विघ्रानयाय॥ ॐ खमूँलँ: मदनीवजीरव
कजवँपह्रँ ३ थनजउञाञन॥ वलमूउागवनायाये॥ लूपलउ हप
लनय॥ ॐ नन निलिस्क पिथिवीदृवना: हस्का त्यांवलद क्र भविरावार्थ॥
थेन थाकुनलवायु॥ केद्य॥ पुअ्रो के:दोलवायुउनुमद्युलयाय॥ ॥
थन ध्यान॥ लदवी भाखिरलणासी:सर्ववृक्षनायिनां॥ चर्य्यानयल अथषु

८ देव पूजाया ॥ गोवना ॥ ॐ ह्रूं सत्र जल गोस्त्र लग स्म श्वजा यूस ल्ल ल चन्वा हंप
वकिट नक्क श्ववसूघ शुक्रं पपकापसिमंच्लं लं: नगात्रष्ठ ह्व लपस्नशिनक्म
श्ववसूघ नाग नाजा सफ फ़ना विस्तुधिनं मानूष्या भंदजि घ ह्रजं न खजुय
गंचासहेजं न. नागया श्वधर्मसर्वलो कालह्रषिनं. कस लोक्यानिकजयर्थ्यका
ननास्थि नं. श्वयाग ॥ धूपश्रीखण्ड ॥ वर्षेत्तु हगवगा नास्मत्यो त्याहगवनाह्नं
यावर्षे धन्नाप्रभूवेत्तु ॥ ॥ धूप. तिलाजन ॥ पं: लों: घं: तु ॥ जलावि धि
नागनाजाय ह्रस्वदं वस्थि नं: सत्वार्थाय सदानिरं: वसूघाय नमोस्तु नं ॥ श्रीविं
ज्ञायासकुनविहिङय ॥ ॐ वसूधाय ह्रूं वं ह्रुं स्वाहा ॥ गो गो लेन श्वगी वसूघा ॥ ८

लागिनस्नूखनऊँका अद्य: जठाकुलयानानं श्रुकवऊँवि गाथ्य ॥ऊँ जगत
थयादिं × घन ॥ऊँ जप्रफिहणवजाय: थ्यादिं × कूश ॥ऊँ वजायूवास
पु ॥ऊँ वाप्पिव् झायस्वाहा ॥ डालगसि ॥ऊँ सर्व्वपापदहनवजायस्वाहा
गायुहास्न ॥ऊँ वजपुष्पनस्वाहा ॥ आऊँग ॥ऊँ वजवगायस्वाहा ॥ फञ्जा ॥
ऊँ वजविश्वायस्वाहा ॥ स्वानउम ॥ऊँ वजशोक्षायस्वाहा ॥ जाय ॥ऊँ सर्व्वसं
पद्दहनवजायस्वाहा ॥ कोलस ॥ऊँ अमृतप्रियायस्वाहा ॥ पंचामृत ॥ज
ज्ञा ॥ इइ ॥ सतु ॥ थ्वनं :अंखः सथनाऊः जला कुगिविय ॥ थनंलिकपाव
लिविय ॥ ॥थनंलिथिहाल ॥ पंचपहाजपूजा ॥ दिगवलिविय ॥

कलश

६

ॐ मिपाञना: स्मिनासूवा। यथामालवलंरग्नं भाक्षसिंह नगायिना॥ नथ

मालव नंजित्वा: सर्वसत्वाथकाने छाने॥ नन: समूपं४ नवंलं: सूंकान

ॐवा पूग्नि जल पृथ्वि वि: मूमनू धा: सपानि कुकोने जु: नड्ड भासमू

ह्वजः वजमोपिरु मिः वजपाको नः वजपूजलवीनवि याव्य॥ व

४वेवज वदिकाया: ॐ जत्वक्र पनि घा मनं: पनानिउवनं विनाव्य॥

थन ज्ञा: यां: निनाजन॥ अर्पयाय। पुं: लों: पं: म्हु॥ वलिविय॥ थन

लिथाहाधयाउ। द शक्रियाविधि थ्वं। प्रतिष्ठा याय॥ ॥ थनंलि विधि

द्वनाहृनियाय॥ थनंलि दिगवलिविये॥ आमृतिविय॥ नगोज ६

कः यिनलोकः थ्वगरसकलं लोकयागं जलसानविय॥ वाक्य॥ हे सज्जन
पं ल्याम्रकं सम्सयपचः सदानजयपिनिकं वाशिथानः ८ वस्तु ४ प्रकंघासव
ज्ञादि ग्वसणिवृषानांः हमिजाथ्वप्रजायपचः त्रिहजावयासर्वः ममदलेज
लसनंः ध्वाहियप नलोकषु याचनस्थनयंकर्म्मः ध्वाहिस्थपदाननः गि
मिएतसास्वस्ति॥ ॥थनसकास्यनंलखकान॥ इति जलहामः दान
विधिस्समाप्तः॥ ॥ ॥ ॐ नमो वृद्धाय॥ नागपूजाकर्म्म विधि
माह॥ नमो नागलावनानस्यं॥ ॐ गत्यप्रेयं जलहासुनलस्नेध्यः वायुसङ्ग
लंप्येवाएंः पटाङ्किनं। जसम्थ्वबनृद्दाक्षुक्रोः पयकपोलिमसत्तुलंः नमो ३ ष्ठद

१० स्वानकन॥किकन॥पूर्वीयाय॥थनः संरवसः साइद्द्ः नयाउाः सूवर्णद्वर्हनिय
उाःपूर्णद्व नियाय॥ ॥थनंलि।ऊमापक्ष॥ओमिवाद॥विसर्जधी॥सघं
नयकं॥चितपूजा॥उत्सूयास्कदक्त धी॥विय॥ॐ भाति ष्यकविय॥ओया
सुनियाय॥संडुलपाना।ॐ नलउाक्रोय॥नायकं।सिध्यसूनः श्रीलक्ष्मि
जडेजनीलउा।नाय॥वनूधधीस्रकी हिनि संणय॥ ॥जलकूडुलस
क्ष।त्रिर्थसंवूयकलस्ऊाय॥नागय्यडधीः दिगदिगसंजयकलसॐाय
थनंलि।कुमालि पूजायाय॥दिउसमवकाय॥कुमानियाः स्वांसिकःकाय॥सम
याचक्र॥पालि।हिनिडलसां॥जुथिडलसां।वुग ॥लडलसां॥लंवकयाउा॥दवला ति ष्वि

द्रुपिंगं: ह्नित्तुज बासकल. नागया४ अपलीसिगिज: वज्रहासमायम्नअसी
जोसर्व्वहीन वज अवलंनाहंध्यजः सर्य्याकालं: समसत्वं. विलायय४॥ नस्मि
स्वजहीज अस्मि. समोनं: स्नान सत्व: अर्घ्योदियानं पुल: सर्जं॥ थन: धूप
श्रीखण्ड: अर्घयाय॥ नल: हन: नस्यै वज्रहकोलुस. ढू नहायकं! ॐ ख
पूजा॥ वज्रहकी अर्स: प्रमानर्थे: पूजा याय॥ ॥ॐ वजसमयसत्वहूं॥
ॐ: रप ह्मा प्रवश्यहिंमिव्या॥ पूजा ॥ ॐ आः४ वज्रहाय हूं स्वाहा॥ पूजामन्त्र॥
थनेलिगादनयाय॥ आसिकि! साड्ड: गष्का: शयूहाम्ह! फस्कि! साखु:॥
ह्मानूचाकू॥ सिजस नाउ असंकस्यं॥ ओपयाय॥ थाल १०८ ॥ मकुथ्वा॥ ॐ व

११ लपस्नसिंग।(जन्मथ्यावजूह्ननागनाजाः सफकुनाः विस्रुषिंगःमानुष्यास्यैःदं
ङिघ तजुनः नागया अष्यनंः सर्वालंकालसुषिग कलापाभिवजपर्व्वा
कासनरिष्किनष्यायायाण॥ ॥षूपश्रीखण्डथनं॥ वषेल्लु लगवनीम्हहान
जास्मतीश्यादि × खजेथवनं× तेगवनाल्ह्यावर्षथ्यानापुमलेल्ल॥ ०
थनेलिः गुजूमहलयाय॥ सम्पाधियाय॥ द वपुजाविधिथ्याय॥
॥थनेलिनागपूजायाय॥ वजूह्नकालसः खानेक्वलफस्यंगावं
नागय॥ ॐ स्फटिक शुभ्रवर्णनकतः ॐ चक्रमिष्यान्नं लाखनासमापन्नं
वैलाखनपशिधामनः कजवजूह्नः सर्वाजेसिंगःमानुष्यास्यैःसफकुनां विधि

विय ॥ तुतुतिः कक्षिनय ॥ कुति ॥ २ ॥ ॐ ॥ स्वानकस्यं तावनागय ॥ दक्षिणः
पद्मनाभदिक्षयं श्रीवत्सकेन श्रीमः सफटं ह्मकुन्तुं ः मृगभलसन्निलंः हि
रुणिकसरवं कणाजलिनं नागेन धस्तुर्ज गभकार्ये ॐ यतिमनुष्यः समयेसवं
गस्समं स्नानं सत्वं ॥ थनेथुपूनेकिथन ॥ अर्घंजलः पुष्पनाग ॥ पुनिमान
र्थं पुजायाय ॥ ॐ पद्मनाभाय हुं फट् स्वाहा ॥ पुजामन्त्र ॥ नादनेयास ॥ ॐ पद्मनाभ
भविपतिः ह्रः जम्बुद्वीप वषापिय २ हुं नं हुं स्वाहा ॥ १०८ ॥ यैः लौः धैः कु
मन्त्र ॥ बलिविया ॥ तुतुतिः [illegible] ॥ कुति ॥ ३ ॥ ॐ ॥ तावनागय ॥ पश्चिमः
तक्षकनागमयं नन्दाव